टूटे हुए रिश्तों की बहाली

हज़रत यूसुफ़ और उस के भाई

ṭūṭe hūe rishtoṅ kī bahālī. hazrat yūsuf aur us ke bhāī

A Family Restored. Hazrat Yusuf and His Brothers

by Bakhtullah

[*Zinda Kalam* 6]

(Urdu—Hindi script)

© 2026 Chashma Media.
published and printed by
GWCS, New Delhi

Bible text is from UGV.

illus. R. Gunther https://freebibleimages.org/illustrations/ls-joseph-coat/; https://freebibleimages.org/illustrations/ls-joseph-dreams/; https://freebibleimages.org/illustrations/ls-joseph-potiphar/; https://freebibleimages.org/illustrations/ls-pharaoh-dream/; https://freebibleimages.org/illustrations/ls-joseph-brothers/; partially modified by OpenAI

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

नफ़रत को जड़ से उखाड़ो	4
मुसीबत में वफ़ादार रहो	7
तब बरकत मिलेगी	9
मुसीबत में अच्छी तबदीली होने दो	28
ख़ुदा बुराई से भलाई पैदा करेगा	29
तौरेत, पैदाइश 37.38–47.50	34

हम इससे किस तरह बच सकते हैं कि ख़ानदानी रिश्ते टूट जाएँ? रिश्ते किस तरह बहाल हो जाते हैं? हज़रत यूसुफ़ की ज़िंदगी से मालूम होता है कि रिश्ते फिर से किस तरह जुड़ सकते हैं। तौरेत में लिखा है,

> यूसुफ़ अपने बाप को अपने भाइयों की बुरी हरकतों की इत्तला दिया करता था। याक़ूब यूसुफ़ को अपने तमाम बेटों की निसबत ज़्यादा प्यार करता था। वजह यह थी कि वह तब पैदा हुआ जब बाप बूढ़ा था। इसलिए याक़ूब ने उसके लिए एक ख़ास रंगदार लिबास बनवाया। जब उसके भाइयों ने देखा कि हमारा बाप यूसुफ़ को हमसे ज़्यादा प्यार करता है तो वह उससे नफ़रत करने लगे और अदब से उससे बात नहीं करते थे।

► **यूसुफ़ के भाई उससे क्यों नफ़रत करते थे?**

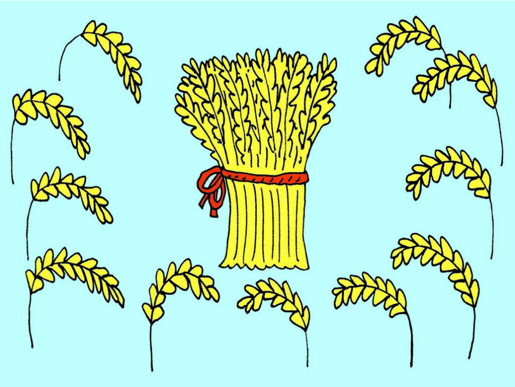

वह बाप को उनकी बुरी हरकतों की इत्तला दिया करता था। और वैसे बाप उसे दूसरों की निसबत ज़्यादा प्यार करता था।

► **यह प्यार किस तरह मालूम होता था?**

उसके लिए रंगदार लिबास बनवाने से। तब एक और बात हुई जिससे दूसरे भाई यूसुफ़ से ज़्यादा नफ़रत करने लगे। यूसुफ़ ने कहा,

> सुनो, मैंने ख़ाब देखा। हम सब खेत में पूले बाँध रहे थे कि मेरा पूला खड़ा हो गया। आपके पूले मेरे पूले के इर्दगिर्द जमा होकर उसके सामने झुक गए।

► **ख़ाब क्या था?**

ख़ाब में भाइयों के पूले उसके सामने झुक गए। यूसुफ़ ने इस तरह का एक और सपना भी देखा। वह बोला,

> मैंने एक और ख़ाब देखा है। उसमें सूरज, चाँद और ग्यारह सितारे मेरे सामने झुक गए।

► **सूरज, चाँद और 11 सितारे कौन थे?**

यह यूसुफ़ के माँ-बाप और भाई थे।

► **दोनों ख़ाबों का क्या मतलब था?**

यह कि एक दिन यूसुफ़ के माँ-बाप और भाई उसके सामने झुक जाएँगे।

► **बहुत सालों के बाद ऐसा ही हुआ। लेकिन क्या यूसुफ़ का यह ख़ाब सुनाना मुफ़ीद था?**

बिलकुल नहीं। इससे यूसुफ़ का ग़ुरूर बढ़ गया जबकि भाइयों की नफ़रत को हवा मिली। साफ़ ज़ाहिर है कि यूसुफ़ ने उस वक़्त ख़ाब

देखने की नेमत ठीक तरह से इस्तेमाल नहीं की। इससे हम पहला सबक़ सीखते हैं,

नफ़रत को जड़ से उखाड़ो

बाप ने यूसुफ़ को ज़्यादा प्यार करने से दूसरों की नफ़रत पैदा की। यूसुफ़ ने आग में तेल डालकर बाप को उनकी बुरी हरकतों के बारे में बताया। न सिर्फ़ यह, अपने ख़ाब सुनाने से उसने उनकी नफ़रत मज़ीद बढ़ाई। ऐसी हरकतों से कितने घर तबाह हो गए हैं। एक दिन याक़ूब ने यूसुफ़ से कहा,

> जाकर मालूम कर कि तेरे भाई और उनके साथ के रेवड़ ख़ैरियत से हैं कि नहीं।

तब यूसुफ़ अपने भाइयों के पीछे चला गया। लिखा है,

> ज्योंही यूसुफ़ अपने भाइयों के पास पहुँचा उन्होंने उसका रंगदार लिबास उतारकर यूसुफ़ को गढ़े में फेंक दिया। गढ़ा ख़ाली था, उसमें पानी नहीं था। फिर वह रोटी खाने के लिए बैठ गए।

जब वह खाना खा रहे थे तो इसमाईलियों का एक क़ाफ़िला नज़र आया। उन्हें देखकर यहूदाह बोला,

> हमें क्या फ़ायदा है अगर अपने भाई को क़त्ल करके उसके ख़ून को छुपा दें? आओ, हम उसे इन इसमाईलियों

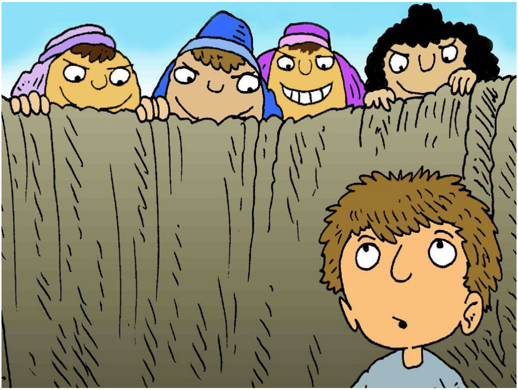

> के हाथ फ़रोख़्त कर दें। फिर कोई ज़रूरत नहीं होगी कि हम उसे हाथ लगाएँ। आख़िर वह हमारा भाई है।

दूसरे मुत्तफ़िक़ हुए। ताजिर वहाँ से गुज़रे तो भाइयों ने यूसुफ़ को गढ़े से निकालकर बेच डाला। सफ़र करते करते इसमाईली मिसर पहुँच गए। वहाँ मिसर के बादशाह के एक आला अफ़सर ने उसे ख़रीद लिया। अफ़सर का नाम फ़ूतीफ़ार था।

बेचारा यूसुफ़। वह न सिर्फ़ अपने घरवालों से महरूम हो गया था। वह ग़ुलाम भी बन गया था। क्या वह ग़म के मारे मर गया? नहीं। वह काम में जुट गया। जल्द ही मालूम होने लगा कि वह काम करनेवाला बंदा है। कलाम इसकी वजह भी बताता है। लिखा है कि ख़ुदा यूसुफ़ के साथ

था। यूसुफ़ हर काम में इतना कामयाब रहा कि आख़िर में मालिक ने अपनी पूरी मिलकियत उसके सुपुर्द की। लिखा है,

> जिस वक़्त से फ़ूतीफ़ार ने अपने घराने का इंतज़ाम और पूरी मिलकियत यूसुफ़ के सुपुर्द की उस वक़्त से रब ने फ़ूतीफ़ार को यूसुफ़ के सबब से बरकत दी। उसकी बरकत फ़ूतीफ़ार की हर चीज़ पर थी, ख़ाह घर में थी या खेत में। फ़ूतीफ़ार ने अपनी हर चीज़ यूसुफ़ के हाथ में छोड़ दी। और चूँकि यूसुफ़ सब कुछ अच्छी तरह चलाता था इसलिए फ़ूतीफ़ार को खाना खाने के सिवा किसी भी मामले की फ़िकर नहीं थी।

► **यूसुफ़ क्यों इतना कामयाब था?**

ख़ुदा ने उसे बरकत दी। इसलिए वह इंतज़ाम चलाने में माहिर था। वह अच्छा मैनेजर था।

लेकिन जल्द ही काले काले बादल उसकी ज़िंदगी पर छाने लगे। जब कभी हम कामयाब हो जाते हैं तब बड़ी मुसीबत में पड़ने का सबसे ज़्यादा ख़तरा है। ऐसा यूसुफ़ के साथ भी हुआ। यूसुफ़ की मुसीबत से हम दूसरा सबक़ सीखते हैं। यह कि

मुसीबत में वफ़ादार रहो

लिखा है,

> यूसुफ़ निहायत ख़ूबसूरत आदमी था। कुछ देर के बाद उसके मालिक की बीवी की आँख उस पर लगी। उसने उससे कहा, "मेरे साथ हमबिसतर हो!"

यूसुफ़ इनकार करके कहने लगा, “मेरे मालिक को मेरे सबब से किसी मामले की फ़िकर नहीं है। उन्होंने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है। घर के इंतज़ाम पर उनका इख़्तियार मेरे इख़्तियार से ज़्यादा नहीं है। आपके सिवा उन्होंने कोई भी चीज़ मुझसे बाज़ नहीं रखी। तो फिर मैं किस तरह इतना ग़लत काम करूँ? मैं किस तरह अल्लाह का गुनाह करूँ?”

► **जब मालिक की बीवी ने यूसुफ़ को वरग़लाने की कोशिश की तो उसने क्या जवाब दिया?**

उसने जवाब दिया कि मालिक ने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है। मैं किस तरह उसका और ख़ुदा का गुनाह करूँ?

► **इसके पीछे उसकी एक बहुत बड़ी ख़ूबी है। वह क्या?**

वफ़ादारी। अपने मालिक और ख़ुदा के मामले में वफ़ादारी।

► **क्या आप अपनी ज़िम्मेदारियाँ वफ़ादारी से निभाते हैं?**

लेकिन कई बार वफ़ादारी ही मुसीबत का बाइस बन जाती है। यूसुफ़ अपनी वफ़ादारी के बाइस बड़ी मुसीबत में पड़ गया। एक दिन मालिक की बीवी ने यूसुफ़ को इतना तंग किया कि वह भाग गया। लेकिन उसका लिबास पीछे औरत के हाथ में ही रह गया। बीवी ने लिबास को मालिक को दिखाया तो उसने ग़ुस्से होकर यूसुफ़ को जेल में डाल दिया।

► **उस ज़माने में मर्द को ज़िना के इलज़ाम के बाइस सज़ाए-मौत दी जाती थी। मालिक ने ऐसा क्यों न किया?**

उसने सोचा होगा कि दाल में कुछ काला है। बहरहाल ख़ुदा ने यूसुफ़ को बचाए रखा। तीसरा सबक़,

तब बरकत मिलेगी

वफ़ादार रहो, तब बरकत मिलेगी। जो ख़ुदा के साथ चलता है उसे मुसीबत के वक़्त भी बरकत मिलती है। लिखा है,

> लेकिन रब यूसुफ़ के साथ था। उसने उस पर मेहरबानी की और उसे क़ैदख़ाने के दारोग़े की नज़र में मक़बूल किया। यूसुफ़ यहाँ तक मक़बूल हुआ कि दारोग़े ने तमाम क़ैदियों को उसके सुपुर्द करके उसे पूरा इंतज़ाम चलाने की ज़िम्मेदारी दी। दारोग़े को किसी भी मामले की जिसे उसने यूसुफ़ के सुपुर्द किया था फ़िकर न रही, क्योंकि

> रब यूसुफ़ के साथ था और उसे हर काम में कामयाबी बख़्शी।

► **क्या यूसुफ़ जेल में मायूस होकर ख़ुदा की राहों से दूर हुआ?**
नहीं।

► **जब वह वफ़ादार रहा तो उसे जेल में क्या तजरबा हुआ?**
वहाँ भी वह काम में जुटकर इतना कामयाब रहा कि दारोग़े ने उसे पूरा इंतज़ाम चलाने की ज़िम्मेदारी दी। वहाँ भी यूसुफ़ अच्छा मैनेजर साबित हुआ।

एक दिन दो नए क़ैदियों को जेल में डाल दिया गया। एक बादशाह का सरदार साक़ी था, दूसरा उसका बेकरी का इंचार्ज। यूसुफ़ उनकी भी देख-भाल करता था। एक सुबह वह दबे हुए नज़र आए। जब यूसुफ़ ने वजह पूछी तो उन्होंने जवाब दिया,

> “हम दोनों ने ख़ाब देखा है, और कोई नहीं जो हमें उनका मतलब बताए।”
> यूसुफ़ ने कहा, “ख़ाबों की ताबीर तो अल्लाह का काम है। ज़रा मुझे अपने ख़ाब तो सुनाएँ।”

► **यूसुफ़ ने ख़ाबों की ताबीर के बारे में क्या कहा?**

उसने कहा कि यह ख़ुदा का काम है। यानी इनसान अपनी ताक़त से सपनों की ताबीर नहीं कर सकता। जादू-टोने से बात नहीं बनेगी। ख़ुदा का बंदा हमेशा जादू-टोने से दूर रहता है। तब लिखा है,

> सरदार साक़ी ने शुरू किया, “मैंने ख़ाब में अपने सामने अंगूर की बेल देखी। उसकी तीन शाख़ें थीं। उसके पत्ते लगे, कोंपलें फूट निकलीं और अंगूर पक गए। मेरे हाथ में बादशाह का प्याला था, और मैंने अंगूरों को तोड़कर यों भींच दिया कि उनका रस बादशाह के प्याले में आ गया। फिर मैंने प्याला बादशाह को पेश किया।”

► **सरदार साक़ी का क्या ख़ाब था?**

बेल की तीन शाख़ों से अच्छे अंगूर पक गए। साक़ी ने उनका रस निचोड़कर बादशाह को पेश किया। यह सुनकर यूसुफ़ बोला,

> तीन शाख़ों से मुराद तीन दिन हैं। तीन दिन के बाद फ़िरौन आपको बहाल कर लेगा। […] लेकिन जब आप बहाल हो जाएँ तो मेरा ख़याल करें। मेहरबानी करके बादशाह के सामने मेरा ज़िक्र करें ताकि मैं यहाँ से रिहा हो जाऊँ।

► **ख़ाब का मतलब क्या था?**

बादशाह, साक़ी को दुबारा बहाल करेगा।

► **यूसुफ़ को ताबीर पर इतना यक़ीन था कि उसने साक़ी से एक दरख़ास्त की। वह क्या?**

बहाल होकर बादशाह के सामने मेरा ज़िक्र करें। फिर बेकरी के इंचार्ज ने अपना ख़ाब सुनाया।

> मैंने सर पर तीन टोकरियाँ उठा रखी थीं जो बेकरी की चीज़ों से भरी हुई थीं। सबसे ऊपरवाली टोकरी में वह

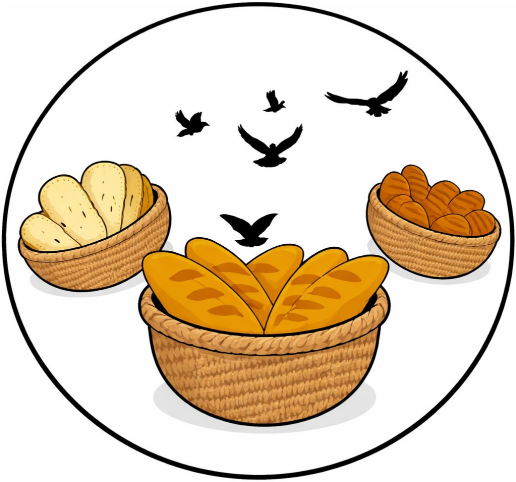

> तमाम चीज़ें थीं जो बादशाह की मेज़ के लिए बनाई जाती हैं। लेकिन परिंदे आकर उन्हें खा रहे थे।

► **बेकरी के इंचार्ज ने क्या सपना देखा?**

उसके सर पर बेकरी की शाही चीज़ों से भरी तीन टोकरियाँ थीं। लेकिन परिंदे उनको खा रहे थे। यह सुनकर यूसुफ़ बोला,

> तीन टोकरियों से मुराद तीन दिन हैं। तीन दिन के बाद ही फ़िरौन आपको क़ैदख़ाने से निकालकर दरख़्त से लटका देगा। परिंदे आपकी लाश को खा जाएँगे।

► **इसका क्या मतलब था?**

बेकरी के इंचार्ज को सज़ाए-मौत मिलेगी और परिंदे उसकी लाश को खा जाएँगे।

तीन दिन के बाद वैसा ही हुआ जैसा यूसुफ़ ने फ़रमाया : बादशाह ने सरदार साक़ी को बहाल किया मगर बेकरी के इंचार्ज को सज़ाए-मौत दी।

► **ग़रज़, यूसुफ़ न सिर्फ़ अच्छा मैनेजर था। अब हमने उसके बारे में एक और ख़ूबी सीख ली है। वह क्या?**

वह ख़ाबों की ताबीर कर सकता था।

► **लेकिन उसने ख़ुद इस पर ज़ोर दिया कि इसके पीछे किसी और का हाथ है। किसका हाथ?**

ख़ुदा का। देखो, जितना जिद्दो-जहद हम क्यों न करें बरकत देनेवाला तो ख़ुदा ही है।

► **जब साक़ी बहाल हुआ तो क्या उसने यूसुफ़ की सिफ़ारिश की?**

नहीं। लिखा है कि वह यूसुफ़ को भूल गया।

लेकिन इसमें ख़ुदा का हाथ था। कई बार हमें भी लगता है कि ख़ुदा हमें भूल गया है। लेकिन जब हम उसकी राहों पर चलते हैं तो आख़िर में वह हमें यूसुफ़ जैसी बरकत देता है। लिखा है,

> दो साल गुज़र गए कि एक रात बादशाह ने ख़ाब देखा। वह दरियाए-नील के किनारे खड़ा था। अचानक दरिया में से सात ख़ूबसूरत और मोटी गाएँ निकलकर सरकंडों

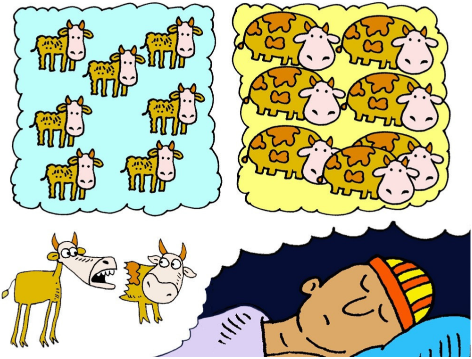

> में चरने लगीं। उनके बाद सात और गाएँ निकल आईं। लेकिन वह बदसूरत और दुबली-पतली थीं। वह दरिया के किनारे दूसरी गायों के पास खड़ी होकर पहली सात ख़ूबसूरत और मोटी मोटी गायों को खा गईं। इसके बाद मिसर का बादशाह जाग उठा।

► **बादशाह ने ख़ाब में क्या देखा?**

सात दुबली-पतली गायों ने सात मोटी-ताज़ी गायों को हड़प लिया।

तब लिखा है,

> फिर वह दुबारा सो गया। इस दफ़ा उसने एक और ख़ाब देखा। अनाज के एक पौधे पर सात मोटी मोटी और अच्छी अच्छी बालें लगी थीं। फिर सात और बालें फूट निकलीं जो दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा से झुलसी

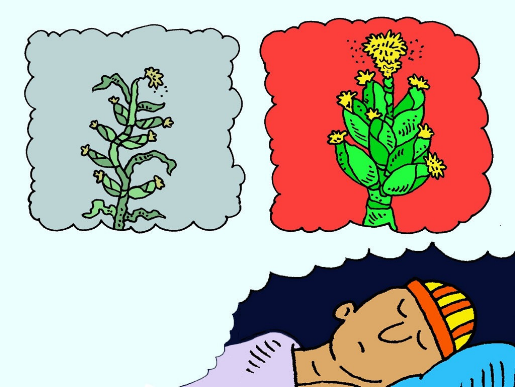

> हुई थीं। अनाज की सात दुबली-पतली बालों ने सात मोटी और ख़ूबसूरत बालों को निगल लिया। फिर फ़िरौन जाग उठा तो मालूम हुआ कि मैंने ख़ाब ही देखा है।

► **इस बार बादशाह ने सपने में क्या देखा?**

अनाज की सात दुबली-पतली बालों ने सात मोटी-ताज़ी बालों को निगल लिया।

सुबह को बादशाह ने मिसर के तमाम जादूगरों और आलिमों को बुलाया। लेकिन कोई भी ख़ाबों की ताबीर करने न पाया। तब साक़ी को यूसुफ़ याद आया, और उसने बादशाह को उसके बारे में बताया। तब यूसुफ़ को जल्दी से बादशाह के हुज़ूर लाया गया। लिखा है,

> बादशाह ने कहा, “मैंने ख़ाब देखा है, और यहाँ कोई नहीं जो उसकी ताबीर कर सके। लेकिन सुना है कि तू ख़ाब को सुनकर उसका मतलब बता सकता है।”
> यूसुफ़ ने जवाब दिया, “यह मेरे इख़्तियार में नहीं है। लेकिन अल्लाह ही बादशाह को सलामती का पैग़ाम देगा।”

► **यूसुफ़ ने क्या जवाब दिया?**

उसने कहा कि ख़ाब की ताबीर सिर्फ़ ख़ुदा की तरफ़ से है। तब बादशाह ने अपने ख़ाब सुनाए। यूसुफ़ ने बादशाह से कहा,

> दोनों ख़ाबों का एक ही मतलब है। इनसे अल्लाह ने हुज़ूर पर ज़ाहिर किया है कि वह क्या कुछ करने को है। [...] सात साल आएँगे जिनके दौरान मिसर के पूरे मुल्क में कसरत से पैदावार होगी। उसके बाद सात साल काल पड़ेगा। काल इतना शदीद होगा कि लोग भूल जाएँगे कि पहले इतनी कसरत थी। [...]

► **ख़ाबों का मतलब क्या था?**

सात साल कसरत से पैदावार होगी, लेकिन इसके बाद सात साल काल पड़ेगा। लेकिन यूसुफ़ ने इसका हल भी सुनाया,

> अब बादशाह किसी समझदार और दानिशमंद आदमी को मुल्के-मिसर का इंतज़ाम सौंपें। इसके अलावा वह

> ऐसे आदमी मुक़र्रर करें जो सात अच्छे सालों के दौरान [...] ख़ुराक जमा करें।

▶ **यूसुफ़ ने क्या हल पेश किया?**

बादशाह मुल्क का इंतज़ाम एक समझदार आदमी को सौंपे जो अपने अफ़सरों के ज़रीए सात अच्छे सालों के दौरान ख़ुराक जमा करे।

▶ **इससे यूसुफ़ की एक और ख़ूबी नज़र आती है। वह क्या?**

अच्छे मैनेजर की हैसियत से वह पहल करता है। यानी वह मसला बढ़ने से पहले ही इसका हल निकालता है। फिर लिखा है,

> यह मनसूबा बादशाह और उसके अफ़सरान को अच्छा लगा। उसने उनसे कहा, “हमें इस काम के लिए यूसुफ़ से ज़्यादा लायक़ आदमी नहीं मिलेगा। उसमें अल्लाह

> की रूह है।” बादशाह ने यूसुफ़ से कहा, “अल्लाह ने यह सब कुछ तुझ पर ज़ाहिर किया है, इसलिए कोई भी तुझसे ज़्यादा समझदार और दानिशमंद नहीं है। मैं तुझे अपने महल पर मुक़र्रर करता हूँ। मेरी तमाम रिआया तेरे ताबे रहेगी। तेरा इख़्तियार सिर्फ़ मेरे इख़्तियार से कम होगा। अब मैं तुझे पूरे मुल्के-मिसर पर हाकिम मुक़र्रर करता हूँ।”

► **बादशाह ने यूसुफ़ के मशवरे पर क्या किया?**

उसने उसे पूरे मुल्क पर मुक़र्रर किया ताकि वह ख़ुराक जमा करने का इंतज़ाम सँभाले।

► **बादशाह ने इसकी वजह भी बताया। वह क्या?**

उसमें अल्लाह की रूह है, और ख़ुदा ने उस पर यह सब कुछ ज़ाहिर किया है। साथ साथ उससे समझदार आदमी नहीं है।

सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा यूसुफ़ ने फ़रमाया था। सात अच्छे सालों के दौरान मुल्क में निहायत अच्छी फ़सलें उग आईं। यूसुफ़ ने ख़ुराक जमा करके शहरों में महफ़ूज़ कर ली। फिर काल के सात साल शुरू हुए। लोग दूसरे मुल्कों से भी आने लगे ताकि ख़ुराक ख़रीद लें।

तब यूसुफ़ के दस भाई भी अनाज ख़रीदने के लिए मिसर आ पहुँचे। सिर्फ़ यूसुफ़ का सगा भाई बिनयमीन साथ नहीं था। लिखा है,

> यूसुफ़ मिसर के हाकिम की हैसियत से लोगों को अनाज बेचता था, इसलिए उसके भाई आकर उसके सामने मुँह के बल झुक गए। [...] यूसुफ़ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, लेकिन उन्होंने उसे न पहचाना। [...] उसने कहा, "तुम जासूस हो।" [...]

► **यूसुफ़ ने यह क्यों कहा?**

यह उनके बारे में मालूमात हासिल करने का बहाना था। वह जानना चाहता था कि बाक़ी फ़ैमिली का क्या हाल है। आगे लिखा है,

> उन्होंने अर्ज़ की, "आपके ख़ादिम कुल बारह भाई हैं। हम एक ही आदमी के बेटे हैं जो कनान में रहता है। सबसे

छोटा भाई इस वक़्त हमारे बाप के पास है जबकि एक मर गया है।“ [...]
यूसुफ़ ने उन्हें तीन दिन के लिए क़ैदख़ाने में डाल दिया। तीसरे दिन उसने उनसे कहा, “अगर तुम वाक़ई शरीफ़ लोग हो तो ऐसा करो कि तुममें से एक यहाँ क़ैदख़ाने में रहे जबकि बाक़ी सब अनाज लेकर अपने भूके घरवालों के पास वापस जाएँ। लेकिन लाज़िम है कि तुम अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ।”

► **यूसुफ़ ने उन्हें एक शर्त पर जाने दिया। वह क्या?**
यह कि वह बिनयमीन को अपने साथ मिसर ले आएँ।

► **यूसुफ़ क्यों चाहता था कि सबसे छोटा भाई आए?**

सिर्फ़ बिनयमीन उसका सगा भाई था। वह एक ही माँ के बेटे थे। इसलिए यूसुफ़ जानना चाहता था कि क्या बिनयमीन ठीक है? या क्या दूसरे भाइयों ने उसके साथ भी बुरा सुलूक किया है? तब लिखा है,

> यूसुफ़ के भाई राज़ी हो गए। वह आपस में कहने लगे, "बेशक यह हमारे अपने भाई पर ज़ुल्म की सज़ा है। जब वह इल्तिजा कर रहा था कि मुझ पर रहम करें तो हमने उसकी बड़ी मुसीबत देखकर भी उसकी न सुनी। इसलिए यह मुसीबत हम पर आ गई है।"
> उन्हें मालूम नहीं था कि यूसुफ़ हमारी बातें समझ सकता है, क्योंकि वह मुतरजिम की मारिफ़त उनसे बात करता था। यह बातें सुनकर वह उन्हें छोड़कर रोने लगा। फिर वह सँभलकर वापस आया। उसने शमाऊन को चुनकर उसे उनके सामने ही बाँध लिया।

► **यूसुफ़ के भाई आपस में क्या कहने लगे?**

उन्हें वह गुनाह चुभने लगा जो बहुत साल पहले उनसे सरज़द हुआ था जब उन्होंने यूसुफ़ को बेच डाला था।

► **इससे हम गुनाह के बारे में एक अहम बात सीखते हैं। वह क्या?**

जब हमसे गुनाह सरज़द होता है तो यह गुनाह हमसे लिपटा रहता है। इसे छुपाया जा सकता है लेकिन हम इसे कभी मिटा नहीं सकते।

► **क्या यूसुफ़ बदला लेने पर अड़ा हुआ था?**

नहीं। यह इससे पता चलता है कि भाइयों की आपस में बातें सुनकर वह उन्हें छोड़कर रोने लगा। आगे लिखा है,

> यूसुफ़ ने हुक्म दिया कि मुलाज़िम उनकी बोरियाँ अनाज से भरकर हर एक भाई के पैसे उसकी बोरी में वापस रख दें और उन्हें सफ़र के लिए खाना भी दें। उन्होंने ऐसा ही किया। फिर यूसुफ़ के भाई अपने गधों पर अनाज लादकर रवाना हो गए।
>
> जब वह रात के लिए किसी जगह पर ठहरे तो एक भाई ने अपने गधे के लिए चारा निकालने की ग़रज़ से अपनी बोरी खोली तो देखा कि बोरी के मुँह में उसके पैसे पड़े हैं। उसने अपने भाइयों से कहा, "मेरे पैसे वापस कर दिए गए हैं! वह मेरी बोरी में हैं।" यह देखकर उनके होश

> उड़ गए। काँपते हुए वह एक दूसरे को देखने और कहने लगे, “यह क्या है जो अल्लाह ने हमारे साथ किया है?”

► **जब भाइयों ने देखा कि पैसे बोरी में पड़े हैं तो उन्हें इसके पीछे किसका हाथ महसूस हुआ?**

ख़ुदा का। उन्होंने किसी और का हाथ इसके पीछे न देखा। जब बाप के पास पहुँचे तो लिखा है,

> उन्होंने अपनी बोरियों से अनाज निकाल दिया तो देखा कि हर एक की बोरी में उसके पैसों की थैली रखी हुई है। यह पैसे देखकर वह ख़ुद और उनका बाप डर गए।

► **वह पैसे देखकर क्यों डर गए?**

डर यह था कि वापसी पर यूसुफ़ उन पर चोरी का इलज़ाम लगाएगा। तब लिखा है,

> काल ने ज़ोर पकड़ा। जब मिसर से लाया गया अनाज ख़त्म हो गया तो याक़ूब ने कहा, “अब वापस जाकर हमारे लिए कुछ और ग़ल्ला ख़रीद लाओ।”
> लेकिन यहूदाह ने कहा, “उस मर्द ने सख़्ती से कहा था, ‘तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकते हो कि तुम्हारा भाई साथ हो।’” […]

आख़िर में बाप मान गया। भाई, बिनयमीन को साथ लेकर रवाना हुए। लिखा है,

> मिसर पहुँचकर वह यूसुफ़ के सामने हाज़िर हुए। जब यूसुफ़ ने बिनयमीन को उनके साथ देखा तो उसने अपने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा, "इन आदमियों को मेरे घर ले जाओ ताकि वह दोपहर का खाना मेरे साथ खाएँ।"

भाइयों ने परेशानी के आलम में मुलाज़िम को बोरियों के पैसों के बारे में बताया। मगर उसने जवाब दिया,

> "फ़िकर न करें। आपके और आपके बाप के ख़ुदा ने आपके लिए आपकी बोरियों में यह ख़ज़ाना रखा होगा। बहरहाल मुझे आपके पैसे मिल गए हैं।"
> मुलाज़िम शमाऊन को उनके पास बाहर ले आया। [...] जब यूसुफ़ ने अपने सगे भाई बिनयमीन को देखा तो उसने कहा, "क्या यह तुम्हारा सबसे छोटा भाई है जिसका तुमने ज़िक्र किया था? बेटा, अल्लाह की नज़रे-करम तुम पर हो।" यूसुफ़ अपने भाई को देखकर इतना मुतअस्सिर हुआ कि वह रोने को था, इसलिए वह जल्दी से वहाँ से निकलकर अपने सोने के कमरे में गया और रो पड़ा। फिर वह अपना मुँह धोकर वापस आया। अपने आप पर क़ाबू पाकर उसने हुक्म दिया कि नौकर खाना ले आएँ। [...] नौकरों ने उन्हें यूसुफ़ की मेज़ पर से खाना लेकर खिलाया। लेकिन बिनयमीन को दूसरों की निसबत पाँच गुना ज़्यादा मिला।

भाई का डर कम हो गया। लगता था कि कल वह सबके सब आज़ादी से अपने घर वापस लौट पाएँगे। लेकिन यूसुफ़ का और मनसूबा था। लिखा है,

> यूसुफ़ ने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम को हुक्म दिया, "उन मर्दों की बोरियाँ ख़ुराक से इतनी भर देना जितनी वह उठाकर ले जा सकें। हर एक के पैसे उसकी अपनी बोरी के मुँह में रख देना। सबसे छोटे भाई की बोरी में न सिर्फ़ पैसे बल्कि मेरे चाँदी के प्याले को भी रख देना।" मुलाज़िम ने ऐसा ही किया।
> अगली सुबह जब पौ फटने लगी तो भाइयों को उनके गधों समेत रुख़सत कर दिया गया। वह अभी शहर से निकलकर दूर नहीं गए थे कि यूसुफ़ ने अपने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा, "जल्दी करो। उन आदमियों का ताक़्क़ुब करो। उनके पास पहुँचकर यह पूछना, […] 'आपने मेरे मालिक का चाँदी का प्याला क्यों चुराया है?'" […]
> जब मुलाज़िम भाइयों के पास पहुँचा तो उसने उनसे यही बातें कीं। जवाब में उन्होंने कहा, "हमारे मालिक ऐसी बातें क्यों करते हैं? […] अगर वह आपके ख़ादिमों में से किसी के पास मिल जाए तो उसे मार डाला जाए और बाक़ी सब आपके ग़ुलाम बनें।"

► **यूसुफ़ ने नौकरों को चाँदी का प्याला बिनयमीन की बोरी में छुपाने का हुक्म क्यों दिया?**

वह देखना चाहता था कि भाई क्या करेंगे। जब बिनयमीन को पकड़ा जाएगा तो क्या वह उसे छोड़कर चले जाएँगे? क्या जो सख़्ती उन्होंने यूसुफ़ के साथ किया वह अब तक रह गई है? आइए हम देखते हैं कि उसने क्या किया। लिखा है,

> मुलाज़िम ने कहा, "ठीक है ऐसा ही होगा। लेकिन सिर्फ़ वही मेरा ग़ुलाम बनेगा जिसने प्याला चुराया है। बाक़ी सब आज़ाद हैं।" [...] मुलाज़िम बोरियों की तलाशी लेने लगा। [...] और वहाँ बिनयमीन की बोरी में से प्याला निकला। भाइयों ने यह देखकर परेशानी में अपने लिबास फाड़ लिए। वह अपने गधों को दुबारा लादकर शहर वापस आ गए।

► **क्या भाई बिनयमीन को छोड़कर चले गए?**

नहीं। वह बिनयमीन के साथ दुबारा यूसुफ़ के हाँ पहुँचे। इससे हम चौथा सबक़ सीखते हैं,

मुसीबत में अच्छी तबदीली होने दो

ठीक तरह से मुसीबत का सामना करने से हमारे किरदार में बेहतरी आती है। सवाल यह है कि मुसीबत में पड़ते वक़्त क्या हमारे किरदार में अच्छी तबदीली आती है? यूसुफ़ के साथ ऐसा ही हुआ। मुसीबत के रूबरू उसे तरक़्क़ी हासिल हुई और उसके किरदार में बेहतरी आई। पहला जो घमंड था वह हलीमी और हिकमत में बदल गया। मुसीबत में ही मैनेजर की ख़ूबियों ने उसमें ज़ोर पकड़ लिया। अब जब यूसुफ़ के भाई मुसीबत में पड़ गए तो यहूदाह में भी तबदीलियाँ नज़र आने लगीं। लिखा है कि यहूदाह ने कहा,

> मेरे मालिक, मेहरबानी करके अपने बंदे को एक बात करने की इजाज़त दें। [...] अगर मैं अपने बाप के पास जाऊँ और वह देखें कि लड़का मेरे साथ नहीं है तो वह दम तोड़ देंगे। उनकी ज़िंदगी इस क़दर लड़के की ज़िंदगी पर मुनहसिर है और वह इतने बूढ़े हैं कि हम ऐसी हरकत से उन्हें क़ब्र तक पहुँचा देंगे। [...] अब अपने ख़ादिम की गुज़ारिश सुनें। मैं यहाँ रहकर इस लड़के की जगह ग़ुलाम

> बन जाता हूँ, और वह दूसरे भाइयों के साथ वापस चला जाए।

► **क्या आपको याद है कि किसने सालों पहले यूसुफ़ को बेचने का मशवरा दिया था?**

यहूदाह ने यह ख़याल पेश किया था।

► **अब यहूदाह ने क्या किया?**

अब उसी ने बिनयमीन को छुड़ाने की कोशिश की। उसमें कितना फ़रक़ आ गया था।

► **उसकी बदली फ़ितरत किस तरह नज़र आती है?**

वह कहता है कि अगर बिनयमीन वापस न आए तो बाप मर जाएगा। इसलिए बिनयमीन की जगह मुझे अपना ग़ुलाम बनाएँ। जब ख़ुदा हमारी ज़िंदगी में काम करता है तो वह हमें नरम कर देता है, हमें बदल देता है। क्या आप मुसीबत में अच्छी तबदीली होने देते हैं? एक आख़िरी बात,

ख़ुदा बुराई से भलाई पैदा करेगा

यहूदाह की बातें सुनकर यूसुफ़ ने क्या जवाब दिया? लिखा है,

> यह सुनकर यूसुफ़ अपने आप पर क़ाबू न रख सका। उसने ऊँची आवाज़ से हुक्म दिया कि तमाम मुलाज़िम कमरे से निकल जाएँ। कोई और शख़्स कमरे में नहीं था जब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को बताया कि वह कौन है।

> वह इतने ज़ोर से रो पड़ा कि मिसरियों ने उसकी आवाज़ सुनी और फ़िरौन के घराने को पता चल गया। यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, "मैं यूसुफ़ हूँ। क्या मेरा बाप अब तक ज़िंदा है?"

► **आख़िरकार यूसुफ़ ने अपने आपको ज़ाहिर किया। क्यों?**

मालूम हुआ था कि भाई पछता गए हैं, कि उनकी फ़ितरत भी बदल गई है। यहाँ तक कि यहूदा ने अपने आपको उसकी जगह ग़ुलाम बनने की तैयारी ज़ाहिर की थी।

► **जब यूसुफ़ ज़ाहिर हुआ तो भाइयों ने क्या जवाब दिया?**

लिखा है,

> उसके भाई यह सुनकर इतने घबरा गए कि वह जवाब न दे सके।

लेकिन यूसुफ़ ने कहा,

> न घबराओ और न अपने आपको इलज़ाम दो कि हमने यूसुफ़ को बेच दिया। असल में अल्लाह ने ख़ुद मुझे तुम्हारे आगे यहाँ भेज दिया ताकि हम सब बचे रहें। [...] अब जल्दी से मेरे बाप के पास वापस जाकर उनसे कहो, 'आपका बेटा यूसुफ़ आपको इत्तला देता है कि अल्लाह ने मुझे मिसर का मालिक बना दिया है। मेरे पास आ जाएँ, देर न करें।'

► **यूसुफ़ ने एक अहम बात फ़रमाई। वह क्या?**

ख़ुदा ने तुम्हारा बुरा इरादा इस्तेमाल किया ताकि हम सब बचे रहें।

► **इससे हम क्या अहम सबक़ सीखते हैं?**

कई बार ख़ुदा हमारी ग़लतियों से हमारी बेहतरी पैदा करता है। तब यूसुफ़ के भाई, बाप को मिसर लाए। लिखा है,

> याक़ूब ने यूसुफ़ से कहा, "अब मैं मरने के लिए तैयार हूँ, क्योंकि मैंने ख़ुद देखा है कि तू ज़िंदा है।"

यों पूरा घर मिसर में आ बसा। वक़्त गुज़रता गया, और एक दिन याक़ूब ने वफ़ात पाई। तब यूसुफ़ के भाई डर गए कि अब यूसुफ़ हमसे बदला लेगा। लेकिन यूसुफ़ बोला,

> मत डरो। क्या मैं अल्लाह की जगह हूँ? हरगिज़ नहीं! तुमने मुझे नुक़सान पहुँचाने का इरादा किया था, लेकिन अल्लाह ने उससे भलाई पैदा की।

► **यूसुफ़ ने क्या जवाब दिया?**

मैं ख़ुदा की जगह नहीं हूँ। यानी सिर्फ़ अल्लाह बदला लेनेवाला है। तुम्हारा इरादा बुरा तो था लेकिन ख़ुदा ने उससे भलाई पैदा की। उसने मुझे तुम्हारे आगे मिसर भेज दिया ताकि तुम सब काल के असर से बच जाओ।

यों हम इस ख़ानदान से सीख सकते हैं कि टूटे हुए रिश्तों की बहाली किस तरह मुमकिन हो जाती है। नफ़रत की जड़ इससे शुरू हुई कि बाप ने यूसुफ़ को ज़्यादा प्यार किया। यूसुफ़ ने इस नफ़रत को अपनी बातों और ख़ाबों से हवा दी। जब रिश्तों में नफ़रत बढ़ जाती है तो कोशिश करनी चाहिए कि इसे जड़ से उखाड़ें। वरना मुसीबत ज़रूर आएगी।

यूसुफ़ बड़ी मुसीबत में आ पड़ा। फिर भी उसने काम में जुटकर मैनेजर की अच्छी ख़ूबियाँ अपनाईं। तब ख़ुदा ने उसे बरकत दी। यहाँ तक कि आख़िरकार वह मिसर में बड़ा अफ़सर बन गया। लेकिन होते होते उसका किरदार बदल गया था। अब वह मग़रूर नौजवान नहीं रहा था। उसकी जगह एक हलीम और दानिशमंद हुक्मरान बन गया था। इसमें वह हमें ईसा मसीह की याद दिलाता है।

लेकिन दूसरे भाइयों में भी तबदीलियाँ आईं। जब वह मिसर पहुँचकर मुसीबत में फँस गए तो वह पछता गए। जो गुनाह उनसे हुआ था वह उन्हें चुभने लगा। और जब यूसुफ़ ने बिनयमीन को रखने का हुक्म दिया तो यहूदाह ने अपने आपको उसकी जगह पेश किया।

यों ख़ुदा ने बुराई से भलाई पैदा की। उसने टूटे हुए रिश्तों को जोड़ने में मदद भी की और साथ साथ पूरे ख़ानदान को काल से बचाया। ख़ुदा हमारी भलाई चाहता है। वह चाहता है कि न सिर्फ़ हमारा उसके साथ रिश्ता बहाल हो जाए बल्कि एक दूसरे के साथ रिश्ता भी। इसलिए उसने ईसा मसीह को दुनिया में भेजा ताकि उसकी क़ुरबानी से हमारे रिश्ते बहाल हो जाएँ।

- ► **क्या आपके रिश्ते बहाल हो गए हैं?**
- ► **क्या आप नफ़रत को जड़ से उखाड़ने की कोशिश करते हैं?**
- ► **क्या आप यूसुफ़ की तरह मुसीबत में वफ़ादार रहते हैं?**
- ► **क्या आप मुसीबत में अच्छी तबदीली होने देते हैं?**

तब ही ख़ुदा बुराई से भलाई पैदा करेगा।

तौरेत, पैदाइश 37.38–47.50

यूसुफ़ के ख़ाब

याक़ूब मुल्के-कनान में रहता था जहाँ पहले उसका बाप भी परदेसी था। [...] उस वक़्त याक़ूब का बेटा यूसुफ़ 17 साल का था। वह अपने भाइयों [...] के साथ भेड़-बकरियों की देख-भाल करता था। यूसुफ़ अपने बाप को अपने भाइयों की बुरी हरकतों की इत्तला दिया करता था।

याक़ूब यूसुफ़ को अपने तमाम बेटों की निसबत ज़्यादा प्यार करता था। वजह यह थी कि वह तब पैदा हुआ जब बाप बूढ़ा था। इसलिए याक़ूब ने उसके लिए एक ख़ास रंगदार लिबास बनवाया। जब उसके भाइयों ने देखा कि हमारा बाप यूसुफ़ को हमसे ज़्यादा प्यार करता है तो वह उससे नफ़रत करने लगे और अदब से उससे बात नहीं करते थे।

एक रात यूसुफ़ ने ख़ाब देखा। जब उसने अपने भाइयों को ख़ाब सुनाया तो वह उससे और भी नफ़रत करने लगे। उसने कहा, “सुनो, मैंने ख़ाब देखा। हम सब खेत में पूले बाँध रहे थे कि मेरा पूला खड़ा हो गया। आपके पूले मेरे पूले के इर्दगिर्द जमा होकर उसके सामने झुक गए।”

उसके भाइयों ने कहा, “अच्छा, तू बादशाह बनकर हम पर हुकूमत करेगा?” उसके ख़ाबों और उसकी बातों के सबब से उनकी उससे नफ़रत मज़ीद बढ़ गई।

कुछ देर के बाद यूसुफ़ ने एक और ख़ाब देखा। उसने अपने भाइयों से कहा, “मैंने एक और ख़ाब देखा है। उसमें सूरज, चाँद और ग्यारह सितारे मेरे सामने झुक गए।” उसने यह ख़ाब अपने बाप को भी सुनाया तो उसने उसे डाँटा। उसने कहा, “यह कैसा ख़ाब है जो तूने देखा! यह कैसी बात है कि मैं, तेरी माँ और तेरे भाई आकर तेरे सामने ज़मीन तक झुक जाएँ?” नतीजे में उसके भाई उससे बहुत हसद करने लगे। लेकिन उसके बाप ने दिल में यह बात महफ़ूज़ रखी।

यूसुफ़ को बेचा जाता है

एक दिन जब यूसुफ़ के भाई अपने बाप के रेवड़ चराने के लिए सिकम तक पहुँच गए थे तो याक़ूब ने यूसुफ़ से कहा, “तेरे भाई सिकम में रेवड़ों को चरा रहे हैं। आ, मैं तुझे उनके पास भेज देता हूँ।”

यूसुफ़ ने जवाब दिया, “ठीक है।”

याक़ूब ने कहा, “जाकर मालूम कर कि तेरे भाई और उनके साथ के रेवड़ ख़ैरियत से हैं कि नहीं। फिर वापस आकर मुझे बता देना।”

[…]

जब यूसुफ़ अभी दूर से नज़र आया तो उसके भाइयों ने उसके पहुँचने से पहले उसे क़त्ल करने का मनसूबा बनाया। उन्होंने कहा, “देखो, ख़ाब देखनेवाला आ रहा है। आओ, हम उसे मार डालें और उसकी लाश किसी गढ़े में फेंक दें। हम कहेंगे कि किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया है। फिर पता चलेगा कि उसके ख़ाबों की क्या हक़ीक़त है।”

जब रूबिन ने उनकी बातें सुनीं तो उसने यूसुफ़ को बचाने की कोशिश की। उसने कहा, “नहीं, हम उसे क़त्ल न करें। उसका ख़ून न करना। बेशक उसे इस गढ़े में फेंक दें जो रेगिस्तान में है, लेकिन उसे हाथ न लगाएँ।” उसने यह इसलिए कहा कि वह उसे बचाकर बाप के पास वापस पहुँचाना चाहता था।

ज्योंही यूसुफ़ अपने भाइयों के पास पहुँचा उन्होंने उसका रंगदार लिबास उतारकर यूसुफ़ को गढ़े में फेंक दिया। गढ़ा ख़ाली था, उसमें पानी नहीं था। फिर वह रोटी खाने के लिए बैठ गए। अचानक इसमाईलियों का एक क़ाफ़िला नज़र आया। वह जिलियाद से मिसर जा रहे थे, और उनके ऊँट क़ीमती मसालों यानी लादन, बलसान और मुर से लदे हुए थे। तब यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा, “हमें क्या फ़ायदा है अगर अपने भाई को क़त्ल करके उसके ख़ून को छुपा दें? आओ, हम उसे इन इसमाईलियों के हाथ फ़रोख़्त

कर दें। फिर कोई ज़रूरत नहीं होगी कि हम उसे हाथ लगाएँ। आख़िर वह हमारा भाई है।”
उसके भाई राज़ी हुए। चुनाँचे जब मिदियानी ताजिर वहाँ से गुज़रे तो भाइयों ने यूसुफ़ को खींचकर गढ़े से निकाला और चाँदी के 20 सिक्कों के एवज़ बेच डाला। इसमाईली उसे लेकर मिसर चले गए।
उस वक़्त रूबिन मौजूद नहीं था। जब वह गढ़े के पास वापस आया तो यूसुफ़ उसमें नहीं था। यह देखकर उसने परेशानी में अपने कपड़े फाड़ डाले। वह अपने भाइयों के पास वापस गया और कहा, “लड़का नहीं है। अब मैं किस तरह अब्बू के पास जाऊँ?” तब उन्होंने बकरा ज़बह करके यूसुफ़ का लिबास उसके ख़ून में डुबोया, फिर रंगदार लिबास इस ख़बर के साथ अपने बाप को भिजवा दिया कि “हमें यह मिला है। इसे ग़ौर से देखें। यह आपके बेटे का लिबास तो नहीं?”
याक़ूब ने उसे पहचान लिया और कहा, “बेशक उसी का है। किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया है। यक़ीनन यूसुफ़ को फाड़ दिया गया है।” याक़ूब ने ग़म के मारे अपने कपड़े फाड़े और अपनी कमर से टाट ओढ़कर बड़ी देर तक अपने बेटे के लिए मातम करता रहा। उसके तमाम बेटे-बेटियाँ उसे तसल्ली देने आए, लेकिन उसने तसल्ली पाने से इनकार किया और कहा, “मैं पाताल में उतरते

हुए भी अपने बेटे के लिए मातम करूँगा।” इस हालत में वह अपने बेटे के लिए रोता रहा। […]

यूसुफ़ और फ़ूतीफ़ार की बीवी

इसमाईलियों ने यूसुफ़ को मिसर ले जाकर बेच दिया था। मिसर के बादशाह के एक आला अफ़सर बनाम फ़ूतीफ़ार ने उसे ख़रीद लिया। वह शाही मुहाफ़िज़ों का कप्तान था। रब यूसुफ़ के साथ था। जो भी काम वह करता उसमें कामयाब रहता। वह अपने मिसरी मालिक के घर में रहता था जिसने देखा कि रब यूसुफ़ के साथ है और उसे हर काम में कामयाबी देता है। चुनाँचे यूसुफ़ को मालिक की ख़ास मेहरबानी हासिल हुई, और फ़ूतीफ़ार ने उसे अपना ज़ाती नौकर बना लिया। उसने उसे अपने घराने के इंतज़ाम पर मुक़र्रर किया और अपनी पूरी मिलकियत उसके सुपुर्द कर दी। जिस वक़्त से फ़ूतीफ़ार ने अपने घराने का इंतज़ाम और पूरी मिलकियत यूसुफ़ के सुपुर्द की उस वक़्त से रब ने फ़ूतीफ़ार को यूसुफ़ के सबब से बरकत दी। उसकी बरकत फ़ूतीफ़ार की हर चीज़ पर थी, ख़ाह घर में थी या खेत में। फ़ूतीफ़ार ने अपनी हर चीज़ यूसुफ़ के हाथ में छोड़ दी। और चूँकि यूसुफ़ सब कुछ अच्छी तरह चलाता था इसलिए फ़ूतीफ़ार को खाना खाने के सिवा किसी भी मामले की फ़िकर नहीं थी।

यूसुफ़ निहायत ख़ूबसूरत आदमी था। कुछ देर के बाद उसके मालिक की बीवी की आँख उस पर लगी। उसने उससे कहा, “मेरे साथ हमबिसतर हो!” यूसुफ़ इनकार करके कहने लगा, “मेरे मालिक को मेरे सबब से किसी मामले की फ़िकर नहीं है। उन्होंने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है। घर के इंतज़ाम पर उनका इख़्तियार मेरे इख़्तियार से ज़्यादा नहीं है। आपके सिवा उन्होंने कोई भी चीज़ मुझसे बाज़ नहीं रखी। तो फिर मैं किस तरह इतना ग़लत काम करूँ? मैं किस तरह अल्लाह का गुनाह करूँ?”

मालिक की बीवी रोज़ बरोज़ यूसुफ़ के पीछे पड़ी रही कि मेरे साथ हमबिसतर हो। लेकिन वह हमेशा इनकार करता रहा।

एक दिन वह काम करने के लिए घर में गया। घर में और कोई नौकर नहीं था। फ़ूतीफ़ार की बीवी ने यूसुफ़ का लिबास पकड़कर कहा, “मेरे साथ हमबिसतर हो!” यूसुफ़ भागकर बाहर चला गया लेकिन उसका लिबास पीछे औरत के हाथ में ही रह गया। जब मालिक की बीवी ने देखा कि वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया है तो उसने घर के नौकरों को बुलाकर कहा, “यह देखो! मेरे मालिक इस इबरानी को हमारे पास ले आए हैं ताकि वह हमें ज़लील करे। वह मेरी इसमतदरी करने के लिए मेरे कमरे में आ गया, लेकिन मैं ऊँची आवाज़ से चीख़ने लगी। जब मैं मदद के लिए ऊँची आवाज़ से चीख़ने लगी तो वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया।” उसने

मालिक के आने तक यूसुफ़ का लिबास अपने पास रखा। जब वह घर वापस आया तो उसने उसे यही कहानी सुनाई, “यह इबरानी ग़ुलाम जो आप ले आए हैं मेरी तज़लील के लिए मेरे पास आया। लेकिन जब मैं मदद के लिए चीख़ने लगी तो वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया।”

यूसुफ़ क़ैदख़ाने में

यह सुनकर फ़ूतीफ़ार बड़े ग़ुस्से में आ गया। उसने यूसुफ़ को गिरिफ़्तार करके उस जेल में डाल दिया जहाँ बादशाह के क़ैदी रखे जाते थे। वहीं वह रहा। लेकिन रब यूसुफ़ के साथ था। उसने उस पर मेहरबानी की और उसे क़ैदख़ाने के दारोग़े की नज़र में मक़बूल किया। यूसुफ़ यहाँ तक मक़बूल हुआ कि दारोग़े ने तमाम क़ैदियों को उसके सुपुर्द करके उसे पूरा इंतज़ाम चलाने की ज़िम्मेदारी दी। दारोग़े को किसी भी मामले की जिसे उसने यूसुफ़ के सुपुर्द किया था फ़िकर न रही, क्योंकि रब यूसुफ़ के साथ था और उसे हर काम में कामयाबी बख़्शी।

क़ैदियों के ख़ाब

कुछ देर के बाद यों हुआ कि मिसर के बादशाह के सरदार साक़ी और बेकरी के इंचार्ज ने अपने मालिक का गुनाह किया। फ़िरौन को दोनों अफ़सरों पर ग़ुस्सा आ गया। उसने उन्हें उस क़ैदख़ाने में

डाल दिया जो शाही मुहाफ़िज़ों के कप्तान के सुपुर्द था और जिसमें यूसुफ़ था। मुहाफ़िज़ों के कप्तान ने उन्हें यूसुफ़ के हवाले किया ताकि वह उनकी ख़िदमत करे। वहाँ वह काफ़ी देर तक रहे।

एक रात बादशाह के सरदार साक़ी और बेकरी के इंचार्ज ने ख़ाब देखा। दोनों का ख़ाब फ़रक़ फ़रक़ था, और उनका मतलब भी फ़रक़ फ़रक़ था। जब यूसुफ़ सुबह के वक़्त उनके पास आया तो वह दबे हुए नज़र आए। उसने उनसे पूछा, "आज आप क्यों इतने परेशान हैं?"

उन्होंने जवाब दिया, "हम दोनों ने ख़ाब देखा है, और कोई नहीं जो हमें उनका मतलब बताए।"

यूसुफ़ ने कहा, "ख़ाबों की ताबीर तो अल्लाह का काम है। ज़रा मुझे अपने ख़ाब तो सुनाएँ।"

सरदार साक़ी ने शुरू किया, "मैंने ख़ाब में अपने सामने अंगूर की बेल देखी। उसकी तीन शाख़ें थीं। उसके पत्ते लगे, कोंपलें फूट निकलीं और अंगूर पक गए। मेरे हाथ में बादशाह का प्याला था, और मैंने अंगूरों को तोड़कर यों भींच दिया कि उनका रस बादशाह के प्याले में आ गया। फिर मैंने प्याला बादशाह को पेश किया।"

यूसुफ़ ने कहा, "तीन शाख़ों से मुराद तीन दिन हैं। तीन दिन के बाद फ़िरौन आपको बहाल कर लेगा। आपको पहली ज़िम्मेदारी वापस मिल जाएगी। आप पहले की तरह सरदार साक़ी की हैसियत से

बादशाह का प्याला सँभालेंगे। लेकिन जब आप बहाल हो जाएँ तो मेरा ख़याल करें। मेहरबानी करके बादशाह के सामने मेरा ज़िक्र करें ताकि मैं यहाँ से रिहा हो जाऊँ। क्योंकि मुझे इबरानियों के मुल्क से इग़वा करके यहाँ लाया गया है, और यहाँ भी मुझसे कोई ऐसी ग़लती नहीं हुई कि मुझे इस गढ़े में फेंका जाता।”

जब शाही बेकरी के इंचार्ज ने देखा कि सरदार साक़ी के ख़ाब का अच्छा मतलब निकला तो उसने यूसुफ़ से कहा, “मेरा ख़ाब भी सुनें। मैंने सर पर तीन टोकरियाँ उठा रखी थीं जो बेकरी की चीज़ों से भरी हुई थीं। सबसे ऊपरवाली टोकरी में वह तमाम चीज़ें थीं जो बादशाह की मेज़ के लिए बनाई जाती हैं। लेकिन परिंदे आकर उन्हें खा रहे थे।”

यूसुफ़ ने कहा, “तीन टोकरियों से मुराद तीन दिन हैं। तीन दिन के बाद ही फ़िरौन आपको क़ैदख़ाने से निकालकर दरख़्त से लटका देगा। परिंदे आपकी लाश को खा जाएँगे।”

तीन दिन के बाद बादशाह की सालगिरह थी। उसने अपने तमाम अफ़सरों की ज़ियाफ़त की। इस मौक़े पर उसने सरदार साक़ी और बेकरी के इंचार्ज को जेल से निकालकर अपने हुज़ूर लाने का हुक्म दिया। सरदार साक़ी को पहलेवाली ज़िम्मेदारी सौंप दी गई, लेकिन बेकरी के इंचार्ज को सज़ाए-मौत देकर दरख़्त से लटका दिया गया। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा यूसुफ़ ने कहा था।

लेकिन सरदार साक़ी ने यूसुफ़ का ख़याल न किया बल्कि उसे भूल ही गया।

बादशाह के ख़्वाब

दो साल गुज़र गए कि एक रात बादशाह ने ख़्वाब देखा। वह दरियाए-नील के किनारे खड़ा था। अचानक दरिया में से सात ख़ूबसूरत और मोटी गाएँ निकलकर सरकंडों में चरने लगीं। उनके बाद सात और गाएँ निकल आईं। लेकिन वह बदसूरत और दुबली-पतली थीं। वह दरिया के किनारे दूसरी गायों के पास खड़ी होकर पहली सात ख़ूबसूरत और मोटी मोटी गायों को खा गईं। इसके बाद मिसर का बादशाह जाग उठा।

फिर वह दुबारा सो गया। इस दफ़ा उसने एक और ख़्वाब देखा। अनाज के एक पौधे पर सात मोटी मोटी और अच्छी अच्छी बालें लगी थीं। फिर सात और बालें फूट निकलीं जो दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा से झुलसी हुई थीं। अनाज की सात दुबली-पतली बालों ने सात मोटी और ख़ूबसूरत बालों को निगल लिया। फिर फ़िरौन जाग उठा तो मालूम हुआ कि मैंने ख़्वाब ही देखा है।

सुबह हुई तो वह परेशान था, इसलिए उसने मिसर के तमाम जादूगरों और आलिमों को बुलाया। उसने उन्हें अपने ख़्वाब सुनाए, लेकिन कोई भी उनकी ताबीर न कर सका।

फिर सरदार साक़ी ने फ़िरौन से कहा, “आज मुझे अपनी ख़ताएँ याद आती हैं। एक दिन फ़िरौन अपने ख़ादिमों से नाराज़ हुए। हुज़ूर ने मुझे और बेकरी के इंचार्ज को क़ैदख़ाने में डलवा दिया जिस पर शाही मुहाफ़िज़ों का कप्तान मुक़र्रर था। एक ही रात में हम दोनों ने मुख़्तलिफ़ ख़ाब देखे जिनका मतलब फ़रक़ फ़रक़ था। वहाँ जेल में एक इबरानी नौजवान था। वह मुहाफ़िज़ों के कप्तान का ग़ुलाम था। हमने उसे अपने ख़ाब सुनाए तो उसने हमें उनका मतलब बता दिया। और जो कुछ भी उसने बताया सब कुछ वैसा ही हुआ। मुझे अपनी ज़िम्मेदारी वापस मिल गई जबकि बेकरी के इंचार्ज को सज़ाए-मौत देकर दरख़्त से लटका दिया गया।”

यह सुनकर फ़िरौन ने यूसुफ़ को बुलाया, और उसे जल्दी से क़ैदख़ाने से लाया गया। उसने शेव करवाकर अपने कपड़े बदले और सीधे बादशाह के हुज़ूर पहुँचा।

बादशाह ने कहा, “मैंने ख़ाब देखा है, और यहाँ कोई नहीं जो उसकी ताबीर कर सके। लेकिन सुना है कि तू ख़ाब को सुनकर उसका मतलब बता सकता है।”

यूसुफ़ ने जवाब दिया, “यह मेरे इख़्तियार में नहीं है। लेकिन अल्लाह ही बादशाह को सलामती का पैग़ाम देगा।”

फ़िरौन ने यूसुफ़ को अपने ख़ाब सुनाए, “मैं ख़ाब में दरियाए-नील के किनारे खड़ा था। अचानक दरिया में से सात मोटी मोटी और

ख़ूबसूरत गाएँ निकलकर सरकंडों में चरने लगीं। इसके बाद सात और गाएँ निकलीं। वह निहायत बदसूरत और दुबली-पतली थीं। मैंने इतनी बदसूरत गाएँ मिसर में कहीं भी नहीं देखीं। दुबली और बदसूरत गाएँ पहली मोटी गायों को खा गईं। और निगलने के बाद भी मालूम नहीं होता था कि उन्होंने मोटी गायों को खाया है। वह पहले की तरह बदसूरत ही थीं। इसके बाद मैं जाग उठा। फिर मैंने एक और ख़ाब देखा। सात मोटी और अच्छी बालें एक ही पौधे पर लगी थीं। इसके बाद सात और बालें निकलीं जो ख़राब, दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा से झुलसी हुई थीं। सात दुबली-पतली बालें सात अच्छी बालों को निगल गईं। मैंने यह सब कुछ अपने जादूगरों को बताया, लेकिन वह इसकी ताबीर न कर सके।"

यूसुफ़ ने बादशाह से कहा, "दोनों ख़ाबों का एक ही मतलब है। इनसे अल्लाह ने हुज़ूर पर ज़ाहिर किया है कि वह क्या कुछ करने को है। सात अच्छी गायों से मुराद सात साल हैं। इसी तरह सात अच्छी बालों से मुराद भी सात साल हैं। दोनों ख़ाब एक ही बात बयान करते हैं। जो सात दुबली और बदसूरत गाएँ बाद में निकलीं उनसे मुराद सात और साल हैं। यही सात दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा से झुलसी हुई बालों का मतलब भी है। वह एक ही बात बयान करती हैं कि सात साल तक काल पड़ेगा। यह वही बात है जो मैंने हुज़ूर से कही कि अल्लाह ने हुज़ूर पर

ज़ाहिर किया है कि वह क्या करेगा। सात साल आएँगे जिनके दौरान मिसर के पूरे मुल्क में कसरत से पैदावार होगी। उसके बाद सात साल काल पड़ेगा। काल इतना शदीद होगा कि लोग भूल जाएँगे कि पहले इतनी कसरत थी। क्योंकि काल मुल्क को तबाह कर देगा। काल की शिद्दत के बाइस अच्छे सालों की कसरत याद ही नहीं रहेगी। हुज़ूर को इसलिए एक ही पैग़ाम दो मुख़्तलिफ़ ख़ाबों की सूरत में मिला कि अल्लाह इसका पक्का इरादा रखता है, और वह जल्द ही इस पर अमल करेगा। अब बादशाह किसी समझदार और दानिशमंद आदमी को मुल्के-मिसर का इंतज़ाम सौंपें। इसके अलावा वह ऐसे आदमी मुक़र्रर करें जो सात अच्छे सालों के दौरान हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा लें। वह उन अच्छे सालों के दौरान ख़ुराक जमा करें। बादशाह उन्हें इख़्तियार दें कि वह शहरों में गोदाम बनाकर अनाज को महफ़ूज़ कर लें। यह ख़ुराक काल के उन सात सालों के लिए मख़सूस की जाए जो मिसर में आनेवाले हैं। यों मुल्क तबाह नहीं होगा।”

यूसुफ़ को मिसर पर हाकिम मुक़र्रर किया जाता है

यह मनसूबा बादशाह और उसके अफ़सरान को अच्छा लगा। उसने उनसे कहा, “हमें इस काम के लिए यूसुफ़ से ज़्यादा लायक़ आदमी नहीं मिलेगा। उसमें अल्लाह की रूह है।” बादशाह ने यूसुफ़ से कहा, “अल्लाह ने यह सब कुछ तुझ पर ज़ाहिर किया है, इसलिए कोई

भी तुझसे ज़्यादा समझदार और दानिशमंद नहीं है। मैं तुझे अपने महल पर मुक़र्रर करता हूँ। मेरी तमाम रिआया तेरे ताबे रहेगी। तेरा इख़्तियार सिर्फ़ मेरे इख़्तियार से कम होगा। अब मैं तुझे पूरे मुल्के-मिसर पर हाकिम मुक़र्रर करता हूँ।"

बादशाह ने अपनी उँगली से वह अंगूठी उतारी जिससे मोहर लगाता था और उसे यूसुफ़ की उँगली में पहना दिया। उसने उसे कतान का बारीक लिबास पहनाया और उसके गले में सोने का गलूबंद पहना दिया। फिर उसने उसे अपने दूसरे रथ में सवार किया और लोग उसके आगे आगे पुकारते रहे, "घुटने टेको! घुटने टेको!"

यों यूसुफ़ पूरे मिसर का हाकिम बना। फ़िरौन ने उससे कहा, "मैं तो बादशाह हूँ, लेकिन तेरी इजाज़त के बग़ैर पूरे मुल्क में कोई भी अपना हाथ या पाँव नहीं हिलाएगा।" [...]

यूसुफ़ 30 साल का था जब वह मिसर के बादशाह फ़िरौन की ख़िदमत करने लगा। उसने फ़िरौन के हुज़ूर से निकलकर मिसर का दौरा किया। सात अच्छे सालों के दौरान मुल्क में निहायत अच्छी फ़सलें उगीं। यूसुफ़ ने तमाम ख़ुराक जमा करके शहरों में महफ़ूज़ कर ली। हर शहर में उसने इर्दगिर्द के खेतों की पैदावार महफ़ूज़ रखी। जमाशुदा अनाज समुंदर की रेत की मानिंद बकसरत था। इतना अनाज था कि यूसुफ़ ने आख़िरकार उसकी पैमाइश करना छोड़ दिया। [...]

सात अच्छे साल जिनमें कसरत की फ़सलें उगीं गुज़र गए। फिर काल के सात साल शुरू हुए जिस तरह यूसुफ़ ने कहा था। तमाम दीगर ममालिक में भी काल पड़ गया, लेकिन मिसर में वाफ़िर ख़ुराक पाई जाती थी। जब काल ने तमाम मिसर में ज़ोर पकड़ा तो लोग चीख़कर खाने के लिए बादशाह से मिन्नत करने लगे। तब फ़िरौन ने उनसे कहा, "यूसुफ़ के पास जाओ। जो कुछ वह तुम्हें बताएगा वही करो।" जब काल पूरी दुनिया में फैल गया तो यूसुफ़ ने अनाज के गोदाम खोलकर मिसरियों को अनाज बेच दिया। क्योंकि काल के बाइस मुल्क के हालात बहुत ख़राब हो गए थे। तमाम ममालिक से भी लोग अनाज ख़रीदने के लिए यूसुफ़ के पास आए, क्योंकि पूरी दुनिया सख़्त काल की गिरिफ़्त में थी।

यूसुफ़ के भाई मिसर में

जब याक़ूब को मालूम हुआ कि मिसर में अनाज है तो उसने अपने बेटों से कहा, "तुम क्यों एक दूसरे का मुँह तकते हो? सुना है कि मिसर में अनाज है। वहाँ जाकर हमारे लिए कुछ ख़रीद लाओ ताकि हम भूके न मरें।"

तब यूसुफ़ के दस भाई अनाज ख़रीदने के लिए मिसर गए। लेकिन याक़ूब ने यूसुफ़ के सगे भाई बिनयमीन को साथ न भेजा, क्योंकि उसने कहा, "ऐसा न हो कि उसे जानी नुक़सान पहुँचे।" यों याक़ूब

के बेटे बहुत-सारे और लोगों के साथ मिसर गए, क्योंकि मुल्के-कनान भी काल की गिरिफ़्त में था।
यूसुफ़ मिसर के हाकिम की हैसियत से लोगों को अनाज बेचता था, इसलिए उसके भाई आकर उसके सामने मुँह के बल झुक गए। जब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को देखा तो उसने उन्हें पहचान लिया लेकिन ऐसा किया जैसा उनसे नावाक़िफ़ हो और सख़्ती से उनसे बात की, "तुम कहाँ से आए हो?"
उन्होंने जवाब दिया, "हम मुल्के-कनान से अनाज ख़रीदने के लिए आए हैं।"
गो यूसुफ़ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, लेकिन उन्होंने उसे न पहचाना। उसे वह ख़ाब याद आए जो उसने उनके बारे में देखे थे। उसने कहा, "तुम जासूस हो। तुम यह देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर ग़ैरमहफ़ूज़ है।"
उन्होंने कहा, "जनाब, हरगिज़ नहीं। आपके ग़ुलाम ग़ल्ला ख़रीदने आए हैं। हम सब एक ही मर्द के बेटे हैं। आपके ख़ादिम शरीफ़ लोग हैं, जासूस नहीं हैं।"
लेकिन यूसुफ़ ने इसरार किया, "नहीं, तुम देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर ग़ैरमहफ़ूज़ है।"

उन्होंने अर्ज़ की, "आपके ख़ादिम कुल बारह भाई हैं। हम एक ही आदमी के बेटे हैं जो कनान में रहता है। सबसे छोटा भाई इस वक़्त हमारे बाप के पास है जबकि एक मर गया है।"

लेकिन यूसुफ़ ने अपना इलज़ाम दोहराया, "ऐसा ही है जैसा मैंने कहा है कि तुम जासूस हो। मैं तुम्हारी बातें जाँच लूँगा। फ़िरौन की हयात की क़सम, पहले तुम्हारा सबसे छोटा भाई आए, वरना तुम इस जगह से कभी नहीं जा सकोगे। एक भाई को उसे लाने के लिए भेज दो। बाक़ी सब यहाँ गिरिफ़्तार रहेंगे। फिर पता चलेगा कि तुम्हारी बातें सच हैं कि नहीं। अगर नहीं तो फ़िरौन की हयात की क़सम, इसका मतलब यह होगा कि तुम जासूस हो।"

यह कहकर यूसुफ़ ने उन्हें तीन दिन के लिए क़ैदख़ाने में डाल दिया। तीसरे दिन उसने उनसे कहा, "मैं अल्लाह का ख़ौफ़ मानता हूँ, इसलिए तुमको एक शर्त पर जीता छोड़ूँगा। अगर तुम वाक़ई शरीफ़ लोग हो तो ऐसा करो कि तुममें से एक यहाँ क़ैदख़ाने में रहे जबकि बाक़ी सब अनाज लेकर अपने भूके घरवालों के पास वापस जाएँ। लेकिन लाज़िम है कि तुम अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ। सिर्फ़ इससे तुम्हारी बातें सच साबित होंगी और तुम मौत से बच जाओगे।"

यूसुफ़ के भाई राज़ी हो गए। वह आपस में कहने लगे, "बेशक यह हमारे अपने भाई पर ज़ुल्म की सज़ा है। जब वह इल्तिजा

कर रहा था कि मुझ पर रहम करें तो हमने उसकी बड़ी मुसीबत देखकर भी उसकी न सुनी। इसलिए यह मुसीबत हम पर आ गई है।” और रूबिन ने कहा, “क्या मैंने नहीं कहा था कि लड़के पर ज़ुल्म मत करो, लेकिन तुमने मेरी एक न मानी। अब उसकी मौत का हिसाब-किताब किया जा रहा है।”

उन्हें मालूम नहीं था कि यूसुफ़ हमारी बातें समझ सकता है, क्योंकि वह मुतरजिम की मारिफ़त उनसे बात करता था। यह बातें सुनकर वह उन्हें छोड़कर रोने लगा। फिर वह सँभलकर वापस आया। उसने शमाऊन को चुनकर उसे उनके सामने ही बाँध लिया।

यूसुफ़ के भाई कनान वापस जाते हैं

यूसुफ़ ने हुक्म दिया कि मुलाज़िम उनकी बोरियाँ अनाज से भरकर हर एक भाई के पैसे उसकी बोरी में वापस रख दें और उन्हें सफ़र के लिए खाना भी दें। उन्होंने ऐसा ही किया। फिर यूसुफ़ के भाई अपने गधों पर अनाज लादकर रवाना हो गए।

जब वह रात के लिए किसी जगह पर ठहरे तो एक भाई ने अपने गधे के लिए चारा निकालने की ग़रज़ से अपनी बोरी खोली तो देखा कि बोरी के मुँह में उसके पैसे पड़े हैं। उसने अपने भाइयों से कहा, “मेरे पैसे वापस कर दिए गए हैं! वह मेरी बोरी में हैं।”

यह देखकर उनके होश उड़ गए। काँपते हुए वह एक दूसरे को देखने और कहने लगे, “यह क्या है जो अल्लाह ने हमारे साथ किया है?”

मुल्के-कनान में अपने बाप के पास पहुँचकर उन्होंने उसे सब कुछ सुनाया जो उनके साथ हुआ था। उन्होंने कहा, “उस मुल्क के मालिक ने बड़ी सख़्ती से हमारे साथ बात की। उसने हमें जासूस क़रार दिया। लेकिन हमने उससे कहा, ‘हम जासूस नहीं बल्कि शरीफ़ लोग हैं। हम बारह भाई हैं, एक ही बाप के बेटे। एक तो मर गया जबकि सबसे छोटा भाई इस वक़्त कनान में बाप के पास है।’ फिर उस मुल्क के मालिक ने हमसे कहा, ‘इससे मुझे पता चलेगा कि तुम शरीफ़ लोग हो कि एक भाई को मेरे पास छोड़ दो और अपने भूके घरवालों के लिए ख़ुराक लेकर चले जाओ। लेकिन अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ ताकि मुझे मालूम हो जाए कि तुम जासूस नहीं बल्कि शरीफ़ लोग हो। फिर मैं तुमको तुम्हारा भाई वापस कर दूँगा और तुम इस मुल्क में आज़ादी से तिजारत कर सकोगे।’”

उन्होंने अपनी बोरियों से अनाज निकाल दिया तो देखा कि हर एक की बोरी में उसके पैसों की थैली रखी हुई है। यह पैसे देखकर वह ख़ुद और उनका बाप डर गए। उनके बाप ने उनसे कहा, “तुमने मुझे मेरे बच्चों से महरूम कर दिया है। यूसुफ़ नहीं रहा, शमाऊन भी नहीं रहा और अब तुम बिनयमीन को भी मुझसे छीनना चाहते हो। सब कुछ मेरे ख़िलाफ़ है।”

फिर रूबिन बोल उठा, “अगर मैं उसे सलामती से आपके पास वापस न पहुँचाऊँ तो आप मेरे दो बेटों को सज़ाए-मौत दे सकते हैं। उसे मेरे सुपुर्द करें तो मैं उसे वापस ले आऊँगा।”

लेकिन याक़ूब ने कहा, “मेरा बेटा तुम्हारे साथ जाने का नहीं। क्योंकि उसका भाई मर गया है और वह अकेला ही रह गया है। अगर उसको रास्ते में जानी नुक़सान पहुँचे तो तुम मुझ बूढ़े को ग़म के मारे पाताल में पहुँचाओगे।”

बिनयमीन के हमराह दूसरा सफ़र

काल ने ज़ोर पकड़ा। जब मिसर से लाया गया अनाज ख़त्म हो गया तो याक़ूब ने कहा, “अब वापस जाकर हमारे लिए कुछ और ग़ल्ला ख़रीद लाओ।”

लेकिन यहूदाह ने कहा, “उस मर्द ने सख़्ती से कहा था, ‘तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकते हो कि तुम्हारा भाई साथ हो।’ अगर आप हमारे भाई को साथ भेजें तो फिर हम जाकर आपके लिए ग़ल्ला ख़रीदेंगे वरना नहीं। क्योंकि उस आदमी ने कहा था कि हम सिर्फ़ इस सूरत में उसके पास आ सकते हैं कि हमारा भाई साथ हो।”

याक़ूब ने कहा, “तुमने उसे क्यों बताया कि हमारा एक और भाई भी है? इससे तुमने मुझे बड़ी मुसीबत में डाल दिया है।”

उन्होंने जवाब दिया, “वह आदमी हमारे और हमारे ख़ानदान के बारे में पूछता रहा, ‘क्या तुम्हारा बाप अब तक ज़िंदा है? क्या तुम्हारा कोई और भाई है?’ फिर हमें जवाब देना पड़ा। हमें क्या पता था कि वह हमें अपने भाई को साथ लाने को कहेगा।”

फिर यहूदाह ने बाप से कहा, “लड़के को मेरे साथ भेज दें तो हम अभी रवाना हो जाएँगे। वरना आप, हमारे बच्चे बल्कि हम सब भूके मर जाएँगे। मैं ख़ुद उसका ज़ामिन हूँगा। आप मुझे उसकी जान का ज़िम्मेदार ठहरा सकते हैं। अगर मैं उसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िंदगी के आख़िर तक क़ुसूरवार ठहरूँगा। जितनी देर तक हम झिजकते रहे हैं उतनी देर में तो हम दो दफ़ा मिसर जाकर वापस आ सकते थे।”

तब उनके बाप इसराईल ने कहा, “अगर और कोई सूरत नहीं तो इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार में से कुछ तोहफ़े के तौर पर लेकर उस आदमी को दे दो यानी कुछ बलसान, शहद, लादन, मुर, पिस्ता और बादाम। अपने साथ दुगुनी रक़म लेकर जाओ, क्योंकि तुम्हें वह पैसे वापस करने हैं जो तुम्हारी बोरियों में रखे गए थे। शायद किसी से ग़लती हुई हो। अपने भाई को लेकर सीधे वापस पहुँचना। अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ करे कि यह आदमी तुम पर रहम करके बिनयमीन और तुम्हारे दूसरे भाई को वापस भेजे। जहाँ तक मेरा

ताल्लुक़ है, अगर मुझे अपने बच्चों से महरूम होना है तो ऐसा ही हो।”

चुनाँचे वह तोह्फ़े, दुगुनी रक़म और बिनयमीन को साथ लेकर चल पड़े। मिसर पहुँचकर वह यूसुफ़ के सामने हाज़िर हुए। जब यूसुफ़ ने बिनयमीन को उनके साथ देखा तो उसने अपने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा, “इन आदमियों को मेरे घर ले जाओ ताकि वह दोपहर का खाना मेरे साथ खाएँ। जानवर को ज़बह करके खाना तैयार करो।”

मुलाज़िम ने ऐसा ही किया और भाइयों को यूसुफ़ के घर ले गया। जब उन्हें उसके घर पहुँचाया जा रहा था तो वह डरकर सोचने लगे, “हमें उन पैसों के सबब से यहाँ लाया जा रहा है जो पहली दफ़ा हमारी बोरियों में वापस किए गए थे। वह हम पर अचानक हमला करके हमारे गधे छीन लेंगे और हमें ग़ुलाम बना लेंगे।”

इसलिए घर के दरवाज़े पर पहुँचकर उन्होंने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा, “जनाबे-आली, हमारी बात सुन लीजिए। इससे पहले हम अनाज ख़रीदने के लिए यहाँ आए थे। लेकिन जब हम यहाँ से रवाना होकर रास्ते में रात के लिए ठहरे तो हमने अपनी बोरियाँ खोलकर देखा कि हर बोरी के मुँह में हमारे पैसों की पूरी रक़म पड़ी है। हम यह पैसे वापस ले आए हैं। नीज़, हम मज़ीद ख़ुराक ख़रीदने के

लिए और पैसे ले आए हैं। ख़ुदा जाने किसने हमारे यह पैसे हमारी बोरियों में रख दिए।”

मुलाज़िम ने कहा, “फ़िकर न करें। मत डरें। आपके और आपके बाप के ख़ुदा ने आपके लिए आपकी बोरियों में यह ख़ज़ाना रखा होगा। बहरहाल मुझे आपके पैसे मिल गए हैं।”

मुलाज़िम शमाऊन को उनके पास बाहर ले आया। फिर उसने भाइयों को यूसुफ़ के घर में ले जाकर उन्हें पाँव धोने के लिए पानी और गधों को चारा दिया। उन्होंने अपने तोह्फ़े तैयार रखे, क्योंकि उन्हें बताया गया, “यूसुफ़ दोपहर का खाना आपके साथ ही खाएगा।”

जब यूसुफ़ घर पहुँचा तो वह अपने तोह्फ़े लेकर उसके सामने आए और मुँह के बल झुक गए। उसने उनसे ख़ैरियत दरियाफ़्त की और फिर कहा, “तुमने अपने बूढ़े बाप का ज़िक्र किया। क्या वह ठीक हैं? क्या वह अब तक ज़िंदा हैं?”

उन्होंने जवाब दिया, “जी, आपके ख़ादिम हमारे बाप अब तक ज़िंदा हैं।” वह दुबारा मुँह के बल झुक गए।

जब यूसुफ़ ने अपने सगे भाई बिनयमीन को देखा तो उसने कहा, “क्या यह तुम्हारा सबसे छोटा भाई है जिसका तुमने ज़िक्र किया था? बेटा, अल्लाह की नज़रे-करम तुम पर हो।” यूसुफ़ अपने भाई को देखकर इतना मुतअस्सिर हुआ कि वह रोने को था, इसलिए

वह जल्दी से वहाँ से निकलकर अपने सोने के कमरे में गया और रो पड़ा। फिर वह अपना मुँह धोकर वापस आया। अपने आप पर क़ाबू पाकर उसने हुक्म दिया कि नौकर खाना ले आएँ।

नौकरों ने यूसुफ़ के लिए खाने का अलग इंतज़ाम किया और भाइयों के लिए अलग। मिसरियों के लिए भी खाने का अलग इंतज़ाम था, क्योंकि इबरानियों के साथ खाना खाना उनकी नज़र में क़ाबिले-नफ़रत था। भाइयों को उनकी उम्र की तरतीब के मुताबिक़ यूसुफ़ के सामने बिठाया गया। यह देखकर भाई निहायत हैरान हुए। नौकरों ने उन्हें यूसुफ़ की मेज़ पर से खाना लेकर खिलाया। लेकिन बिनयमीन को दूसरों की निसबत पाँच गुना ज़्यादा मिला। यों उन्होंने यूसुफ़ के साथ जी भरकर खाया और पिया।

गुमशुदा प्याला

यूसुफ़ ने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम को हुक्म दिया, “उन मर्दों की बोरियाँ ख़ुराक से इतनी भर देना जितनी वह उठाकर ले जा सकें। हर एक के पैसे उसकी अपनी बोरी के मुँह में रख देना। सबसे छोटे भाई की बोरी में न सिर्फ़ पैसे बल्कि मेरे चाँदी के प्याले को भी रख देना।” मुलाज़िम ने ऐसा ही किया।

अगली सुबह जब पौ फटने लगी तो भाइयों को उनके गधों समेत रुख़सत कर दिया गया। वह अभी शहर से निकलकर दूर नहीं गए थे कि यूसुफ़ ने अपने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा, “जल्दी

करो। उन आदमियों का ताक़्क़ुब करो। उनके पास पहुँचकर यह पूछना, ‘आपने हमारी भलाई के जवाब में ग़लत काम क्यों किया है? आपने मेरे मालिक का चाँदी का प्याला क्यों चुराया है? उससे वह न सिर्फ़ पीते हैं बल्कि उसे ग़ैबदानी के लिए भी इस्तेमाल करते हैं। आप एक निहायत संगीन जुर्म के मुरतकिब हुए हैं।’”

जब मुलाज़िम भाइयों के पास पहुँचा तो उसने उनसे यही बातें कीं। जवाब में उन्होंने कहा, “हमारे मालिक ऐसी बातें क्यों करते हैं? कभी नहीं हो सकता कि आपके ख़ादिम ऐसा करें। आप तो जानते हैं कि हम मुल्के-कनान से वह पैसे वापस ले आए जो हमारी बोरियों में थे। तो फिर हम क्यों आपके मालिक के घर से चाँदी या सोना चुराएँगे? अगर वह आपके ख़ादिमों में से किसी के पास मिल जाए तो उसे मार डाला जाए और बाक़ी सब आपके ग़ुलाम बनें।”

मुलाज़िम ने कहा, “ठीक है ऐसा ही होगा। लेकिन सिर्फ़ वही मेरा ग़ुलाम बनेगा जिसने प्याला चुराया है। बाक़ी सब आज़ाद हैं।” उन्होंने जल्दी से अपनी बोरियाँ उतारकर ज़मीन पर रख दीं। हर एक ने अपनी बोरी खोल दी। मुलाज़िम बोरियों की तलाशी लेने लगा। वह बड़े भाई से शुरू करके आख़िरकार सबसे छोटे भाई तक पहुँच गया। और वहाँ बिनयमीन की बोरी में से प्याला निकला। भाइयों ने यह देखकर परेशानी में अपने लिबास फाड़ लिए। वह अपने गधों को दुबारा लादकर शहर वापस आ गए।

जब यहूदाह और उसके भाई यूसुफ़ के घर पहुँचे तो वह अभी वहीं था। वह उसके सामने मुँह के बल गिर गए। यूसुफ़ ने कहा, “यह तुमने क्या किया है? क्या तुम नहीं जानते कि मुझ जैसा आदमी ग़ैब का इल्म रखता है?”

यहूदाह ने कहा, “जनाबे-आली, हम क्या कहें? अब हम अपने दिफ़ा में क्या कहें? अल्लाह ही ने हमें क़ुसूरवार ठहराया है। अब हम सब आपके ग़ुलाम हैं, न सिर्फ़ वह जिसके पास से प्याला मिल गया।”

यूसुफ़ ने कहा, “अल्लाह न करे कि मैं ऐसा करूँ, बल्कि सिर्फ़ वही मेरा ग़ुलाम होगा जिसके पास प्याला था। बाक़ी सब सलामती से अपने बाप के पास वापस चले जाएँ।”

यहूदाह बिनयमीन की सिफ़ारिश करता है

लेकिन यहूदाह ने यूसुफ़ के क़रीब आकर कहा, “मेरे मालिक, मेहरबानी करके अपने बंदे को एक बात करने की इजाज़त दें। मुझ पर ग़ुस्सा न करें अगरचे आप मिसर के बादशाह जैसे हैं। जनाबे-आली, आपने हमसे पूछा, ‘क्या तुम्हारा बाप या कोई और भाई है?’ हमने जवाब दिया, ‘हमारा बाप है। वह बूढ़ा है। हमारा एक छोटा भाई भी है जो उस वक़्त पैदा हुआ जब हमारा बाप उम्ररसीदा था। उस लड़के का भाई मर चुका है। उसकी माँ के सिर्फ़ यह दो बेटे पैदा हुए। अब वह अकेला ही रह गया है। उसका बाप उसे

शिद्दत से प्यार करता है।' जनाबे-आली, आपने हमें बताया, 'उसे यहाँ ले आओ ताकि मैं ख़ुद उसे देख सकूँ।' हमने जवाब दिया, 'यह लड़का अपने बाप को छोड़ नहीं सकता, वरना उसका बाप मर जाएगा।' फिर आपने कहा, 'तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकोगे कि तुम्हारा सबसे छोटा भाई तुम्हारे साथ हो।' जब हम अपने बाप के पास वापस पहुँचे तो हमने उन्हें सब कुछ बताया जो आपने कहा था। फिर उन्होंने हमसे कहा, 'मिसर लौटकर कुछ ग़ल्ला ख़रीद लाओ।' हमने जवाब दिया, 'हम जा नहीं सकते। हम सिर्फ़ इस सूरत में उस मर्द के पास जा सकते हैं कि हमारा सबसे छोटा भाई साथ हो। हम तब ही जा सकते हैं जब वह भी हमारे साथ चले।' हमारे बाप ने हमसे कहा, 'तुम जानते हो कि मेरी बीवी राख़िल से मेरे दो बेटे पैदा हुए। पहला मुझे छोड़ चुका है। किसी जंगली जानवर ने उसे फाड़ खाया होगा, क्योंकि उसी वक़्त से मैंने उसे नहीं देखा। अगर इसको भी मुझसे ले जाने की वजह से जानी नुक़सान पहुँचे तो तुम मुझ बूढ़े को ग़म के मारे पाताल में पहुँचाओगे।'"

यहूदाह ने अपनी बात जारी रखी, "जनाबे-आली, अब अगर मैं अपने बाप के पास जाऊँ और वह देखें कि लड़का मेरे साथ नहीं है तो वह दम तोड़ देंगे। उनकी ज़िंदगी इस क़दर लड़के की ज़िंदगी पर मुनहसिर है और वह इतने बूढ़े हैं कि हम ऐसी हरकत से उन्हें

क़ब्र तक पहुँचा देंगे। न सिर्फ़ यह बल्कि मैंने बाप से कहा, ‘मैं ख़ुद इसका ज़ामिन हूँगा। अगर मैं इसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िंदगी के आख़िर तक क़ुसूरवार ठहरूँगा।’ अब अपने ख़ादिम की गुज़ारिश सुनें। मैं यहाँ रहकर इस लड़के की जगह ग़ुलाम बन जाता हूँ, और वह दूसरे भाइयों के साथ वापस चला जाए। अगर लड़का मेरे साथ न हुआ तो मैं किस तरह अपने बाप को मुँह दिखा सकता हूँ? मैं बरदाश्त नहीं कर सकूँगा कि वह इस मुसीबत में मुब्तला हो जाएँ।”

यूसुफ़ अपने आपको ज़ाहिर करता है

यह सुनकर यूसुफ़ अपने आप पर क़ाबू न रख सका। उसने ऊँची आवाज़ से हुक्म दिया कि तमाम मुलाज़िम कमरे से निकल जाएँ। कोई और शख़्स कमरे में नहीं था जब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को बताया कि वह कौन है। वह इतने ज़ोर से रो पड़ा कि मिसरियों ने उसकी आवाज़ सुनी और फ़िरौन के घराने को पता चल गया। यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं यूसुफ़ हूँ। क्या मेरा बाप अब तक ज़िंदा है?”

लेकिन उसके भाई यह सुनकर इतने घबरा गए कि वह जवाब न दे सके। फिर यूसुफ़ ने कहा, “मेरे क़रीब आओ।” वह क़रीब आए तो उसने कहा, “मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ जिसे तुमने बेचकर मिसर भिजवाया। अब मेरी बात सुनो। न घबराओ और न अपने आपको

इलज़ाम दो कि हमने यूसुफ़ को बेच दिया। असल में अल्लाह ने ख़ुद मुझे तुम्हारे आगे यहाँ भेज दिया ताकि हम सब बचे रहें। यह काल का दूसरा साल है। पाँच और साल के दौरान न हल चलेगा, न फ़सल कटेगी। अल्लाह ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा ताकि दुनिया में तुम्हारा एक बचा-खुचा हिस्सा महफ़ूज़ रहे और तुम्हारी जान एक बड़ी मख़लसी की मारिफ़त छूट जाए। चुनाँचे तुमने मुझे यहाँ नहीं भेजा बल्कि अल्लाह ने। उसने मुझे फ़िरौन का बाप, उसके पूरे घराने का मालिक और मिसर का हाकिम बना दिया है। अब जल्दी से मेरे बाप के पास वापस जाकर उनसे कहो, 'आपका बेटा यूसुफ़ आपको इत्तला देता है कि अल्लाह ने मुझे मिसर का मालिक बना दिया है। मेरे पास आ जाएँ, देर न करें। आप जुशन के इलाक़े में रह सकते हैं। वहाँ आप मेरे क़रीब होंगे, आप, आपकी आल-औलाद, गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ और जो कुछ भी आपका है। वहाँ मैं आपकी ज़रूरियात पूरी करूँगा, क्योंकि काल को अभी पाँच साल और लगेंगे। वरना आप, आपके घरवाले और जो भी आपके हैं बदहाल हो जाएँगे।' तुम ख़ुद और मेरा भाई बिनयमीन देख सकते हो कि मैं यूसुफ़ ही हूँ जो तुम्हारे साथ बात कर रहा हूँ। मेरे बाप को मिसर में मेरे असरो-रसूख़ के बारे में इत्तला दो। उन्हें सब कुछ बताओ जो तुमने देखा है। फिर जल्द ही मेरे बाप को यहाँ ले आओ।"

यह कहकर वह अपने भाई बिनयमीन को गले लगाकर रो पड़ा। बिनयमीन भी उसके गले लगकर रोने लगा। फिर यूसुफ़ ने रोते हुए अपने हर एक भाई को बोसा दिया। इसके बाद उसके भाई उसके साथ बातें करने लगे।

जब यह ख़बर बादशाह के महल तक पहुँची कि यूसुफ़ के भाई आए हैं तो फ़िरौन और उसके तमाम अफ़सरान ख़ुश हुए। उसने यूसुफ़ से कहा, "अपने भाइयों को बता कि अपने जानवरों पर ग़ल्ला लादकर मुल्के-कनान वापस चले जाओ। वहाँ अपने बाप और ख़ानदानों को लेकर मेरे पास आ जाओ। मैं तुमको मिसर की सबसे अच्छी ज़मीन दे दूँगा, और तुम इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार खा सकोगे। उन्हें यह हिदायत भी दे कि अपने बाल-बच्चों के लिए मिसर से गाड़ियाँ ले जाओ और अपने बाप को भी बिठाकर यहाँ ले आओ। अपने माल की ज़्यादा फ़िकर न करो, क्योंकि तुम्हें मुल्के-मिसर का बेहतरीन माल मिलेगा।"

यूसुफ़ के भाइयों ने ऐसा ही किया। [...] वह मिसर से रवाना होकर मुल्के-कनान में अपने बाप के पास पहुँचे। उन्होंने उससे कहा, "यूसुफ़ ज़िंदा है! वह पूरे मिसर का हाकिम है।" लेकिन याक़ूब हक्का-बक्का रह गया, क्योंकि उसे यक़ीन न आया। ताहम उन्होंने उसे सब कुछ बताया जो यूसुफ़ ने उनसे कहा था, और

उसने ख़ुद वह गाड़ियाँ देखीं जो यूसुफ़ ने उसे मिसर ले जाने के लिए भिजवा दी थीं।
फिर याक़ूब की जान में जान आ गई, और उसने कहा, "मेरा बेटा यूसुफ़ ज़िंदा है! यही काफ़ी है। मरने से पहले मैं जाकर उससे मिलूँगा।" […]

याक़ूब और उसका ख़ानदान मिसर में

जब वह वहाँ पहुँचे तो यूसुफ़ अपने रथ पर सवार होकर अपने बाप से मिलने के लिए जुशन गया। उसे देखकर वह उसके गले लगकर काफ़ी देर रोता रहा। याक़ूब ने यूसुफ़ से कहा, "अब मैं मरने के लिए तैयार हूँ, क्योंकि मैंने ख़ुद देखा है कि तू ज़िंदा है।" […]
फिर यूसुफ़ ने अपने बाप और भाइयों को मिसर में आबाद किया। उसने उन्हें रामसीस के इलाक़े में बेहतरीन ज़मीन दी जिस तरह बादशाह ने हुक्म दिया था। यूसुफ़ अपने बाप के पूरे घराने को ख़ुराक मुहैया करता रहा। हर ख़ानदान को उसके बच्चों की तादाद के मुताबिक़ ख़ुराक मिलती रही। […]

याक़ूब का इंतक़ाल

याक़ूब 17 साल मिसर में रहा। वह 147 साल का था जब फ़ौत हुआ। […]

यूसुफ़ अपने भाइयों को तसल्ली देता है

जब याक़ूब इंतक़ाल कर गया तो यूसुफ़ के भाई डर गए। उन्होंने कहा, "ख़तरा है कि अब यूसुफ़ हमारा ताक़्क़ुब करके उस ग़लत काम का बदला ले जो हमने उसके साथ किया था। फिर क्या होगा?" यह सोचकर उन्होंने यूसुफ़ को ख़बर भेजी, "आपके बाप ने मरने से पेशतर हिदायत दी कि यूसुफ़ को बताना, 'अपने भाइयों के उस ग़लत काम को माफ़ कर देना जो उन्होंने तुम्हारे साथ किया।' अब हमें जो आपके बाप के ख़ुदा के पैरोकार हैं माफ़ कर दें।"

यह ख़बर सुनकर यूसुफ़ रो पड़ा। फिर उसके भाई ख़ुद आए और उसके सामने गिर गए। उन्होंने कहा, "हम आपके ख़ादिम हैं।" लेकिन यूसुफ़ ने कहा, "मत डरो। क्या मैं अल्लाह की जगह हूँ? हरगिज़ नहीं! तुमने मुझे नुक़सान पहुँचाने का इरादा किया था, लेकिन अल्लाह ने उससे भलाई पैदा की। और अब इसका मक़सद पूरा हो रहा है। बहुत-से लोग मौत से बच रहे हैं। चुनाँचे अब डरने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को ख़ुराक मुहैया करता रहूँगा।" यों यूसुफ़ ने उन्हें तसल्ली दी और उनसे नरमी से बात की।